SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका लेखापरीक्षा ज्ञानोदय

ग्यारहवां संस्करण

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स

बांद्रा(पूर्व), मुंबई - 400 051

फैक्स-02269403800 **ई-मेल** pdcamumbai@cag.gov.in

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री सी एम साने

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

संरक्षक

श्री मो. फैजान नय्यर, निदेशक/तेल

श्री अविनाश जाधव - निदेशक/मुख्यालय

संपादक-मंडल

श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती मीना देशप्रभु	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती विद्या मुरलीधरन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती कल्पना असगेकर	पर्यवेक्षक
श्री आनंद कुमार सिंह	कनिष्ठ अनुवादक

(रचनाओं की मौलिकता एवं विचार से संबंधित पूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकारों का है- संपादक-मंडल)

अनुक्रमणिका

संदेश	श्री सी एम साने, महानिदेशक
संदेश	श्री मो. फैजान नय्यर, निदेशक/तेल
संदेश	श्री अविनाश जाधव, निदेशक/मुख्यालय
संदेश	श्री अनुपम जाखड़, उपनिदेशक
संपादकीय	श्री आनंद कुमार सिंह
चीकू	श्रीमती स्वप्ना फुलपाड़िया
अस्पष्टता की यात्रा	
काश ऐसा होता	सुश्री वी. सरला
फर्स्ट लेडी स्पाई नीरा आर्या की कहानी	
कर्नाटक-दर्शन	श्री संजय कोटलगी
संबंध और कार्य	श्री आनंद कुमार सिंह
कंप्यूटर और हिंदी प्रयोग	सुश्री पूजा साव
पृथ्वीराज रासो का संक्षिप्त परिचय	श्री इमरान खाटीक
बेटी	श्री रवि कुमार
भारत में बोली जाने वाली भाषाएं	श्री रूपेश कुमार
द्वितीय ऑडिट दिवस आयोजन	
आपके पत्र	
राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य	

संदेश

यह अपार हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी ई“ पत्रिका-लेखापरीक्षा ज्ञानोदय” के दस अंकों के सफल प्रकाशन के पश्चात इस 11वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है जिसके लिए संपादक मंडल को बहुत बहुत बधाई। पत्रिका कार्यालयों के कार्मिकों को राजभाषा के प्रयोग के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए एक रुचिकर माध्यम है। पत्रिका के माध्यम से भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से सबंधित विभिन्न विषयों की जानकारी पाठकों तक पहुँचती है जो बहुत अधिक लाभदायक है। पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों में सृजनात्मकता का विकास करती है जो उनमें नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण है।

संविधान द्वारा हिंदी को राजभाषा का स्थान प्रदान किया गया है। कार्यालय के कार्य में राजभाषा का प्रयोग करना तथा इसके विकास हेतु प्रयास करना हमारा कर्तव्य है। वर्तमान समय में हिंदी का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है एवं इसके विकास हेतु महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। कार्यालयों में राजभाषा के विकास हेतु प्रयास किए जा रहे हैं जिनसे एक अनुकूल वातावरण का निर्माण हो रहा है। हिंदी को सभी स्तर तक पहुंचाने के लिए सरल एवं प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

कार्यालय के वे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी धन्यवाद के पात्र है जिन्होंने अपने सहयोग से पत्रिका के 11वें अंक के प्रकाशन कार्य को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है। प्राप्त रचनाओं को सुंदर तरीके से पत्रिका में सम्मिलित करते हुए प्रस्तुत करने हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक राजभाषा के विकास में अपना योगदान देते हुए प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

(सी एम साने)

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय द्वारा त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 11वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका का समयानुसार निरंतर प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा के विकास में योगदान को प्रदर्शित करता है। पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने की दिशा में किए जा रहे कार्यों में से एक है जिसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

केंद्र सरकार के सभी कार्मिकों का यह कर्तव्य है कि वे राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने तथा प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करने हेतु यथासंभव प्रयास करें। आज हिंदी का प्रयोग वैश्विक स्तर पर भी बढ़ रहा है। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है जिसको उसी प्रकार लिखा जाता है जिस प्रकार उसका उच्चारण किया जाता है। विभिन्न भाषा के शब्दों को स्वयं में समाहित करते हुए हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में एक उच्च स्तर पर पहुँच गई है। हमें अपने कार्यालय के काम-काज को यथासंभव राजभाषा में करते हुए इसके विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए।

मैं कार्यालय के इस कार्य की सराहना करता हूँ तथा हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूँ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(मो. फैजान नय्यर)

निदेशक/तेल

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में अपना योगदान देने हेतु कार्यालय द्वारा त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 11वें अंक का प्रकाशन बहुत ही सुखद अनुभूति का विषय है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। पत्रिकाएं एक रुचिकर माध्यम हैं जो ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित भी करती हैं।

संविधान द्वारा केंद्र सरकार को यह दायित्व सौंपा गया है कि वह हिंदी का विकास करें। इस प्रकार से केंद्र सरकार के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यालय के कार्यों में यथासंभव राजभाषा का प्रयोग करना चाहिए तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए। अब हिंदी को सीखने तथा इसके प्रयोग हेतु कई सुविधाएं उपलब्ध है जिनकी सहायता से हिंदी को आसानी से सीखा जा सकता है तथा इसका प्रयोग भी किया जा सकता है। सभी के मिश्रित प्रयासों के फलस्वरूप हिंदी का प्रयोग समय के साथ बढ़ रहा है। हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने के लिए प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे जो लोग हिंदी सीखने और प्रयोग करने का प्रयास कर रहे हैं, वे प्रेरित हो सकें।

पत्रिका के इस अंक को सफल बनाने में सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

यह आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक आप सभी को पसंद आएगा तथा इसे पढ़ने के पश्चात अपनी प्रतिक्रियाओं से हमारा उत्साह बढाएंगे तथा मार्गदर्शन करेंगे।

अविनाश जाधव

निदेशक/मुख्यालय

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने में अपने उद्देश्य के प्रति प्रयत्नशील है। कार्यालय के कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु पत्रिका का योगदान अत्यंत सराहनीय है। कार्यालय द्वारा किया जा रहा प्रयास प्रशंसनीय है। आशा करता हूँ कि सदैव यह प्रयास अनवरत जारी रहेगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशनार्थ संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं अभिनंदन।

(अनुपम जाखड़)

उपनिदेशक

उप-कार्यालय वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, देहरादून

संपादकीय

कार्यालय की त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 11वें संस्करण को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। पत्रिका के इस अंक के माध्यम से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक क्षमता द्वारा प्रस्तुत रचनाओं को सुंदर एवं उचित तरीके से प्रस्तुत करने का यथासंभव प्रयास किया गया है। पत्रिका को और अधिक बेहतर बनाने हेतु हमारा प्रयास जारी है। गृह पत्रिकाएं राजभाषा के प्रयोग से सभी कार्मिकों को जोड़ती हैं तथा उनमें सृजनात्मक क्षमता के विकास हेतु अपना योगदान देती है।

हिंदी राजभाषा होने के साथ-साथ भारत की एक मुख्य संपर्क भाषा है। भारत का एक बड़ा भाग हिंदी को समझता है। हिंदी भाषा उनके बीच भी संपर्क भाषा का कार्य करती है जिन्हें बहुत अच्छी हिंदी नहीं आती है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण हेतु जाने पर वहाँ भी हिंदी संपर्क भाषा के रूप में अपनी भूमिका निभाती है। राजभाषा हिंदी के विकास हेतु कार्यालय द्वारा यथासंभव प्रयास किया जाता है। कार्यालय द्वारा राजभाषा के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रोत्साहन योजनाएं भी लागू हैं।

कार्यालय के उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सादर धन्यवाद जिनके प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग के परिणामस्वरूप पत्रिका के इस अंक का सफल प्रकाशन संभव हुआ है। हम आशा करते है कि पत्रिका के विगत अंकों के समान यह अंक भी आपको पसंद आएगा तथा पत्रिका के अगले अंक हेतु भी आपका सहयोग हमें मिलेगा।

पत्रिका के पिछले अंक के संबंध में आपकी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं। प्रतिक्रियाओं द्वारा हमारा उत्साहवर्धन करने हेतु सादर धन्यवाद। आप सभी से सादर अनुरोध है कि पत्रिका के इस अंक को पढ़ने के पश्चात अपने बहुमूल्य विचारों से हमें अवगत कराएं तथा अपने मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन से हमारा उत्साहवर्धन करें।

आनंद कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

चीकू

चीकू एक शरारती लड़का था। वह रोज स्कूल नहीं जाता था। वह खेलता था। एक दिन पंडित जी ने उन्हें देखा और कहा - तुम क्लास में आओ, आज मैं तुम्हारी हड्डियों को कुचल दूंगा।

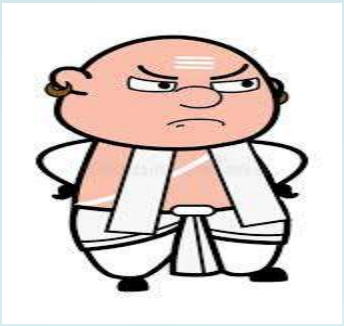

वह पंचम पंडित जी के साथ ही कक्षा में गया। पंडित जी ने कक्षा में प्रवेश किया और कहा - छुट्टी के बाद सभी - गाँव के मेले पर निबंध लिखेंगे।

छुट्टी के बाद सभी घर चले गए। चीकू नहीं गया। वह खेत में चरवाहों के साथ खेलने लगा।

अगले दिन चीकू फिर से पंडित जी के सामने कक्षा में गया और कक्षा की आखिरी बेंच पर बैठ गया।

पंडित जी ने कक्षा के पहले लड़के से कहा - पढ़ो, क्या लिखा है। पहले लड़के ने नोटबुक खोली और पढ़ने लगा। सुनकर पंडित जी नाराज हो गए और बोले- तुमने सब कुछ कॉपी किया !! बिलकुल अच्छा नहीं है!

फिर दूसरा लड़का पढ़ता है। उससे भी पंडित जी खुश नहीं थे। इस तरह सबने एक-एक करके लिखा हुआ पाठ पढ़कर सुनाया, लेकिन पंडित जी को कोई खुश नहीं कर सका।

अंत में पंडित जी ने मुंह छुपाए हुए चीकू को पकड़ लिया।

- चीकू खड़े हो जाओ!

चीकू उठ खड़ा हुआ।

- "नोटबुक खोलो", पंडितजी ने कहा

चीकू ने नोट बुक खोली।

“अब पढ़कर सुनाओ”, पंडितजी ने कहा।

चीकू ने बिना रुके पढ़ना शुरू कर दिया और पढ़ते रहा।

जब उसने पढ़ना समाप्त किया तो उसका लिखा हुआ पंडित जी को इतना पसंद आया कि वह खुशी से झूम उठे और बोले- बहुत बढ़िया लिखा है आपने। आओ, किताब लेकर मेरे पास आओ। अगर कोई वर्तनी की गलती है तो मैं उसे ठीक कर दूंगा।

चीकू ने धीरे से नोटबुक ली और पंडित जी के पास पहुंचा और खड़ा हो गया।

पंडित जी ने नोटबुक खोली तो देखा कि वहां कुछ भी नहीं लिखा था। चीकू ने मन ही मन सब कुछ कह दिया था।

पंडित जी ने कहा- ये है इनोवेशन!

****

श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अस्पष्टता की यात्रा

जीवन अस्पष्टता से भरा है,

कोई निश्चितता नहीं है,

स्पष्टता के साथ जीना मुश्किल है,

यही जीवन की सुंदरता है।

निश्चितता जीवन को ऊबा देती है,

अस्पष्टता और समस्या रचनात्मक साम्राज्य की ओर ले जाती है,

एक ही ओर निश्चित तरीके से जीवन जीना अवसादग्रस्तता सिंड्रोम को इंजेक्ट करता है,

बड़ी तस्वीर और व्यापक क्षितिज देखने का अभाव पैदा करता है।

अस्पष्टता परिवर्तन की जननी है,

अज्ञात को जानने के लिए बस चमत्कारिक दुनिया में उतरें,

और अनदेखी को देखने के लिए,

बस शांत हो जाओ और कायाकल्प करो।

अस्पष्ट वातावरण में संभावनाओं की दुनिया दस्तक दे रही है,

अनछुए क्षेत्र के स्वाद का आनंद लेने के लिए बस गहरे नीचे,

धैर्य और ईमानदारी रखें,

प्रतिबद्धता के साथ गुलाबी उम्मीद जगेगी।

बहुत सी बातें अस्पष्ट लग सकती हैं,

लगता है आउट ऑफ सिलेबस हो गया है

अनमोल है वो पल,

बुद्धि के लिए सरल स्वदेशी है।

****

क्रिसमस

हर बार एक हाथ दूसरे की मदद के लिए आगे बढ़ता है।
वह क्रिसमस है
हर बार कोई गुस्से को एक तरफ रख देता है और समझने की कोशिश करता है
वह क्रिसमस है
हर बार लोग अपने मतभेदों को भूल जाते हैं और एक दूसरे के लिए प्यार का एहसास करते हैं
वह क्रिसमस है
यह क्रिसमस हमें मानवीय समझ की भावना और शांति के आशीर्वाद के करीब लाए
खुश रहो

सुश्री वी सरला

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

काश ऐसा होता

काश ऐसा होता

होती एक ही धरती अपनी

ना कोई भारत, ना चीन न ईरान होता

यूं जमीन के टुकड़े न होते और ना कोई सरहद हमें रोकते

फिर जहां मन चाहा वही बसेरा कर लेते।

काश ऐसा होता

होती भाईचारा चारो ओर

ना शस्त्रों पर खर्च कोई देश करता

फिर ना सैनिक कोई युद्ध मे मारा जाता।

काश ऐसा होता

होती सभी के जुबान पर प्यार की भाषा

और ना जात पात का भेद भाव होता

फिर ना कोई देश का विभाजन होता।

काश ऐसा होता

होता हर नेता को देश से प्यार इतना

और ना जेब भरने की इच्छा होती

फिर ना भ्रष्टाचार का रोग फैलता और देश कितना आगे बढ़ जाता

काश ऐसा होता

होता आईना कोई एक जो दिखाता मन की सुंदरता

देख जिसे बाहरी सुंदरता का कोई मोल न होता

फिर ना आभूषणो की जररूत होती और ना नुमाइश होती।

काश ऐसा होता

होता स्वर्ग इसी धरती पर ही

और नदियां झरना झर झर बहते जाते

फिर ना कोई इंसान मंगल ग्रह पर पानी की खोज में जाता।

काश ऐसा होता

होती इंसान मे प्रौढ़ता इतनी

अपने उम्र के हिसाब चलता

फिर हर मर्यादा का पालन होता।

काश ऐसा होता

होती नहीं इंसान को वारिस की सनक इतनी

सरोगसी और आईवीएफ़ के बदले कोई अन्नाथ को ही गोद लेता

फिर हर बच्चे को माँ बाप का सहारा मिल जाता।

काश ऐसा होता

होता इंसान को अपने रूह से रिश्ता गहरा इतना

अपने अन्तर्मन की आवाज को टटोलता

फिर हर कोई इस धरती पर सुख शांति से जीता

काश ऐसा होता ....

****

सुश्री वी सरला

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

फर्स्ट लेडी स्पाई नीरा आर्या की कहानी

भारत में कई साहसी महिलाएं स्वतंत्रता सेनानी रही हैं। कुछ लोकप्रिय नाम है- श्रीमती रानी लक्ष्मीबाई, श्रीमती अरुणा आसफ अली, श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीमती ऐनी बेसेंट आदि। एक साहसी स्वतंत्रता सेनानी जिन्हे कहा जाता है 'फर्स्ट लेडी स्पाई', वह श्रीमती नीरा आर्या थी ।

में बनी फिल्म राजी भारतीय महिला जासूस सहमत जी के जीवन पर आधारित थी 2018 जिन्होंने अपने पति को मार डाला था । हालांकि बहुत कम लोग जानते हैं कि आजादी से पहले श्रीमती नीरा आर्या ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को बचाने के लिए अपने पति की हत्या कर दी थी। जनवरी में हुए जयपुर फिल्म फेस्टिवल में चीन की फिल्मकार झांग 2021 हुइहुआंग ग्रेसी, नीरा आर्य पर लिखी पुस्तक से काफी प्रभावित 'फर्स्ट लेडी स्पाई'हुई थीं। उन्होंने नीरा आर्या के जीवन संघर्ष पर फिल्म बनाने की मंशा जाहिर की। नीरा आर्या की कहानी कुछ इस तरह थी।

श्रीमती नीरा आर्या का जन्म को बागपत के खेकड़ा में एक धनि परिवार में 1902 मार्च 5 पिता का निधन हो गया था। इसके बाद सेठ -हुआ था। पांच वर्ष की आयु में उनके माता छज्जूमल नीरा को गोद लेकर कलकत्ता चले गए थे। पढ़ाई के समय से ही नीराआर्या नेताजी सुभाष चंद्र बोस के आजाद हिंद फौज में रानी झांसी रेजीमेंट की सिपाही थीं।

नीरा आर्या का विवाह ब्रिटिश भारत के सीआईडी इंस्पेक्टर श्रीकांत जयरंजन दास के साथ हुआ। श्रीकांत जयरंजन दास अंग्रेजों के करीबी थे और चाहते थे की नीराजी नेताजी की जासूसी करें किन्तु नीराजी ने इस बात से इंकार कर दिया। पति के नेताजी को जान से मार ने की असफल प्रयास के बाद नीराजी ने पति की हत्या कर दी।

नीराजी को पति की हत्या के आरोप में काले पानी की सजा हुई, जहां उन्हें घोर यातनाएं दी गईं। को हैदराबाद में नीराजी की मौत हो गई। नीरा आर्या 1998 जुलाई 26 ने अपने अंतिम वर्ष गरीबी में बिताए थे और उसे जीवन यापन के लिए फूल बेचने पड़े ।

स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के अवसर पर इस महान स्वतंत्रता सेनानी को हमारा सलाम।

(स्रोत: विकिपीडिया और समाचार पत्र)

****

श्री संजय कोटलगी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कर्नाटक-दर्शन

कर्नाटक भारत देश के दक्षिण में स्थित एक महत्वपूर्ण राज्य है जिसे पूर्व समय में मैसूर के नाम से जाना जाता था। इसका इतिहास बहुत ही प्राचीन है। इस स्थान पर प्राचीन समय में कई शासकों का शासन रहा है। कर्नाटक में बहुत से दर्शनीय स्थल हैं जिनका भ्रमण मन को आनंदित करने वाला है। यहाँ कुछ दर्शनीय स्थलों से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की गई है।

बैंगलोर- बैंगलोर को गार्डन सिटी के नाम से भी जाना जाता है। कर्नाटक के साथ-साथ भारत के सबसे प्रमुख और लोकप्रिय शहरों में कर्नाटक का नाम आता है। यहाँ का वातावरण सुखद है जहां कई बगीचे, झीलें और मंदिर आदि देखने को मिलते हैं। वर्तमान में बैंगलोर भारत की सिलिकॉन वैली के रूप में विकसित हो गया है। यह शहर अपनी नाइट लाइफ के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

बीजापुर- बीजापुर कर्नाटक का एक ऐतिहासिक पर्यटन स्थल है जहां पर कई प्रसिद्ध स्मारक और इमारतें देखने को मिलती हैं। इतिहासकारों के लिए भी यह स्थान काफी प्रसिद्ध है। बीजापुर कर्नाटक का एक प्रमुख व्यवसायिक जिला है।

कुर्ग- कुर्ग प्राकृतिक सुंदरता से भर हुआ है। कर्नाटक राज्य में स्थित कुर्ग बहुत ही अच्छा स्थान है, यह स्थान चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ है, जो प्राकृतिक सुंदरता से युक्त बहुत ही खूबसूरत और मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। हरियाली से भरा हुआ यह स्थान प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है। यह लोकप्रिय कॉफी उत्पादक हिल स्टेशन है।

हम्पी- हम्पी को प्राचीन खंडहरों के लिए जाना जाता है। इस स्थान को युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल किया गया है। पहाड़ियों और घाटियों के बीच में स्थित हम्पी में कई खूबसूरत ऐतिहासिक मंदिर, स्मारक हैं जो प्राकृतिक सुंदरता से युक्त हैं।

मैसूर- मैसूर कर्नाटक के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। यह शहर अपनी शाही विरासत, जटिल वास्तुकला, योग, चंदन और रेशमी साड़ियों के लिए पूरे भारत में बहुत प्रसिद्ध है। मैसूर पैलेस भारत के सबसे आकर्षक महलों में से एक है।

बेलूर- बेलूर कर्नाटक का एक बहुत ही प्रसिद्ध सुंदर एवं आकर्षक मंदिर शहर है। यह मंदिर कर्नाटक के हासन जिले में स्थित है। यहां पर भगवान विष्णु के अवतार भगवान चेनेकवा को समर्पित एक भव्य होयसल मंदिर है जो श्रद्धालुओ के बीच बहुत लोकप्रिय है। इस मंदिर की जटिल नक्काशी मन को मोहने वाली है।

गोकर्ण- गोकर्ण में हिंदुओ के कई धार्मिक स्थल देखने हैं जहां पर भारी संख्या में श्रद्धालु आते हैं, यहां पर कई प्राचीन मंदिर मौजूद हैं। यहाँ के समुद्र तट का नजारा बहुत ही खूबसूरत एवं आकर्षक है।

उडुपी- उडुपी कर्नाटक का एक प्रमुख शहर है जो कि एक तरफ से पश्चिमी घाट से तथा दूसरी ओर से अरब सागर से घिरा हुआ है। यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता और खूबसूरत समुद्र तटों के लिए जाना जाता है। समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाले इस शहर में कई प्रसिद्ध मंदिर हैं।

मुरुदेश्वर- अरब सागर के तट पर स्थित मुरुदेश्वर कर्नाटक का लोकप्रिय शहर है जो धार्मिक आस्था का बेहद पवित्र स्थान है। इस शहर में भगवान शिव की विशाल मूर्ति स्थापित है जो दुनिया में मौजूद भगवान शिव जी की सबसे ऊंची मूर्तियों में से एक है।

मंगलुरु- मंगलुरु एक तटीय शहर है जो कर्नाटक के प्रमुख शहरों में आता है। यहाँ खूबसूरत समुद्र तट के साथ-साथ कई लोकप्रिय स्थान हैं। यहाँ सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। यहाँ स्वादिष्ट समुद्री भोजन भी मिलता है।

दांडेली- जंगलों और वन्य जीवों से घिरा हुआ यह स्थान कर्नाटक का बहुत ही सुंदर प्राकृतिक पर्यटन स्थल है। इसके अलावा यह स्थान काली नदी में एडवेंचर स्पोर्ट्स, बोटिंग, नेचर वॉक, फिशिंग और नाइट कैपिंग के लिए जाना जाता है। यहां पर काली नदी में व्हाइट वॉटर राफ्टिंग और दांडेली वन्य जीव अभयारण्य आकर्षण का केंद्र हैं।

श्रवणबेलगोला- श्रवणबेलगोला कर्नाटक का एक प्रसिद्ध आकर्षक पर्यटन स्थल है। यहां पर भगवान गोमतेश्वर की 58 फिट लंबी विशाल मूर्ति मौजूद है जो आकर्षण का केंद्र है। भगवान श्री गोमतेश्वर प्रथम जैन तीर्थकर भगवान आदिनाथ के पुत्र थे। यह स्थान कर्नाटक के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल में से एक है जो जैनियो का प्रसिद्ध पवित्र तीर्थ स्थान है।

चिकमंगलुर- मुल्लायनगिरी रेंज की तलहटी में स्थित यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता से भरा हुआ है जो अपने हरे भरे जंगलों, यागाची नदी और और शांत सुंदर प्राकृतिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ हेब्बे वॉटर फॉल, केम्मनगुंडी, मुल्लायनगिरी, कुद्रेमुख राष्ट्रीय उद्यान और बाबा बुदनगिरी आदि आकर्षक स्थल है। यह स्थान कॉफी उत्पादन के लिए भी जाना जाता है।

पत्तदकल- पत्तदकल कर्नाटक का ऐतिहासिक स्थान है जो कर्नाटक के बगरकोट जिले में स्थित एक सुंदर शहर है। इस स्थान को युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल की सूची में शामिल किया गया है। यहां कई ऐतिहासिक इमारतें हैं जिसमें सुंदर प्राचीन मंदिर आदि शामिल हैं। इतिहासकारों के बीच यह स्थान बहुत लोकप्रिय हैं।

नंदी हिल्स- नंदी हिल्स कर्नाटक का एक लोकप्रिय एवं आकर्षक स्थल है। यहां का वातावरण बहुत ही शान्त और हरा-भरा सुनहरा है। यहां से सूर्योदय का नजारा काफी आकर्षक होता है।

देवबाग- देवबाग कर्नाटक का एक बहुत सुंदर स्थान है जो प्राकृतिक सुंदरता से भरा हुआ है। सुंदर पहाड़ों और कैसूरिनास के पेड़ो से घिरा हुआ यह स्थान अत्यंत आकर्षक प्रतीत होता है।

बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान- बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान कर्नाटक के सबसे प्रमुख उद्यानों में से एक है जहां पर कई प्रकार के वन्य जीव देखने को मिलते हैं जिसमें हाथी, भालू, हिरण, हॉर्नबिल्स और पैंथर आदि शामिल हैं। यह स्थान पहले मैसूर के राजा का शिकारगाह हुआ करता था। पेड़ पौधों से घिरा हुआ यहां का हरा भरा वातावरण बहुत ही आकर्षक है।

शिवनासमुद्र फॉल्स- शिवनासमुद्र फॉल्स कर्नाटक के सबसे प्रमुख झरनो में से एक है जहां की प्राकृतिक सुंदरता देखने लायक है। मानसून के मौसम में यहां का प्राकृतिक दृश्य मन को मोहने वाला होता है। यहां पर ट्रैकिंग, फिशिंग और कैंपिंग जैसी गतिविधियों का भी आनंद उठाया जाता है।

नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान- नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान कर्नाटक का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है जहां पर कई प्रकार के वन्य जीव और पक्षी देखने को मिलते हैं जिसमे बाघ, तेंदुआ, हाथी, सियार, हिरण, गौर, सांभर, नेवला और लकड़बग्घा आदि शामिल हैं।

काबिनी- काबिनी नदी के तट पर स्थित यह स्थान कर्नाटक के बेहतरीन पर्यटन स्थलों में से एक है जो प्राकृतिक सुंदरता का बेहद खूबसूरत अद्भुत दृश्य प्रस्तुत

करता है। यह एक रोमांचकारी स्थान है जहां का सुहावना वातावरण भाव विभोर करने वाला होता है।

कर्नाटक में इतिहास एवं प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ आधुनिक विकास देखने को मिलता है जो बहुत ही सुंदर है एवं आकर्षक है।

****

राजभाषा संबंधी जानकारी

राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) के अनुसार हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाने वाले दस्तावेज --

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागज़ात

1- सामान्य आदेश (General Orders)
2 -संकल्प (Resolution)
3- परिपत्र (Circulars)
4-नियम (Rules)
5- प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other reports)
6- प्रेस विज्ञप्तियां (Press Release/Communiques)
7- संविदाएं (Contracts)
8- करार (Agreements)
9- अनुज्ञप्तियां (licenses)
10- निविदा प्रारुप (Tender Forms)
11- अनुज्ञा पत्र (Permits)
12- निविदा सूचनाएं (Tender Notices)
13- अधिसूचनाएं (Notifications)
14- संसद के समक्ष् रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र (Reports and documents to be laid before the Parliament)

****

श्री आनंद कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

संबंध और कार्य

मनुष्य के लिए संबंधों का बहुत बड़ा महत्व है। संबंध ही हैं जो मनुष्य को एक डोर में बांध के रखते है। मनुष्य के जीवन की व्याख्या संबंधों के आधार पर किया जाता है। मनुष्य जन्म के साथ ही विभिन्न संबंधों से अपने आप को जोड़ लेता है जो समय के अनुसार उसके साथ चलते रहते हैं या समय के साथ बदलते रहते हैं। मनुष्य समाज के एक अंग के रूप में अपने जीवन का निर्वाह करता है। यूनान के महान दार्शनिक अरस्तू के अनुसार,"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है"। मनुष्यों के द्वारा समाज का निर्माण किया जाता है और समाज मनुष्य के विकास में योगदान देने हेतु उचित स्थिति-परिस्थिति तैयार करता है। इस प्रकार से समाज और मनुष्य दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

जब मनुष्य का जन्म होता है तो उसे जन्म के साथ एक समाज या परिवार मिलता है जिसका दायरा समय के साथ बढ़ता जाता है। मनुष्य जन्म के साथ ही समाज से जुड़ जाता है जो उसके विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। जन्म के साथ वह एक परिवार से जुड़ जाता है, जो उसके लिए प्राथमिक संबंध होता है। इसके पश्चात जब वह थोड़ा बड़ा होता है और विद्यालय जाता है तो उसे एक नया परिवेश मिलता है जो उसे नए संबंधों के निर्माण हेतु अवसर प्रदान करता है। वह अपने सहपाठियों, अध्यापकों आदि के साथ नए संबंधों के वातावरण में प्रवेश करता है। शिक्षा के पूर्ण होने के बाद वह अपने सबंधों के निर्माण की दिशा में अगले चरण में प्रवेश करता है। वह अपनी आजीविका के लिए स्वयं को किसी रोजगार या व्यवसाय से जोड़ता है। अब उसके संबंधों के क्षेत्र में विस्तार होता है। पुराने संबंधों के साथ नए संबंध बनते हैं। नए परिवेश में नए-नए संबंध अपना स्थान निर्धारित करते हैं। संबंधों का दायरा और स्वरूप दोनों बढ़ जाते है। इसका प्रभाव उसके व्यवहार और कार्य पर भी पड़ता है।

मनुष्य अपने कार्यक्षेत्र में संबंधों का निर्माण भिन्न-भिन्न आधार पर करता है, जैसे समान संस्कृति, पद, भाषा, आयु आदि। इन संबंधों के साथ मनुष्य में विभिन्न योग्यताएं विकसित होती हैं जो उसमें नव ऊर्जा का संचार करती है। कार्यक्षेत्र के वातावरण में सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के संबंधों का निर्माण होता है। नकारात्मक संबंधों के कई अलग-

अलग कारण हो सकते हैं। एक योग्य वातावरण के निर्माण हेतु विविध कारणों से बने नकारात्मक संबंधों को सुधारना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि कार्यस्थल पर अपने कर्तव्यों का उचित रूप से पालन करने के लिए संबंधों का माहौल अच्छा होना बहुत आवश्यक है।

कार्यस्थल पर कार्य के दौरान निष्ठा से कार्य करते हुए अपने साथी कार्मिकों के साथ उचित व्यवहार करते हुए परस्पर सौहार्दपूर्ण संबंध बनाकर रखना चाहिए। इस प्रकार के वातावरण में कार्य-क्षमता के साथ-साथ व्यक्तित्व का भी विकास होता है जो व्यक्ति के व्यक्तिगत रूप से तो लाभदायक होता ही है, इसके साथ ही कार्य संस्था के लिए भी बहुत अच्छा होता है। अपने उत्तरदायित्वों का उचित रूप से पालन करने के लिए अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को छोड़कर संस्था के हित के लिए कार्य करना आवश्यक है जिसके लिए अपने साथी कार्मिकों के साथ उचित संबंध बनाकर रखना चाहिए।

एक व्यक्ति के सामान्य दिन का एक महत्वपूर्ण भाग कार्य के लिए समर्पित होता है। व्यक्ति कार्य के दौरान अपना सर्वोत्तम योगदान दे सके, इसके लिए आवश्यक है कि कार्य-स्थल का वातावरण अनुकूल हो। प्रतिकूल वातावरण में मनुष्य मन असमंजस की स्थिति में होता है और वह अपना पूर्ण योगदान नहीं दे पाता है जिसका असर कार्य पर भी पड़ता है। व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंधों का निर्वाह उचित रूप से करना चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहीं भी प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। कार्यों का निष्पादन पूर्ण ईमानदारी एवं निष्ठा से करते हुए संबंधों के साथ उचित सामंजस्य बनाए रखना चाहिए। व्यक्ति को नकारात्मक गुणों से दूर रहते हुए साथी कार्मिकों के साथ एक सौहार्दपूर्ण उचित संबंध रखना चाहिए। यदि संबंधों में कोई गलतफहमी हो तो आपस में विचार या स्पष्ट बातचित के द्वारा इसे दूर करना चाहिए।समस्याओं का निराकरण आपसी विचार-विमर्श से किया जाना चाहिए जिसमें कहीं भी अपनी बात किसी पर थोपने का भाव नहीं होना चाहिए।

कार्य-स्थल पर कार्य करने वाले प्रत्येक कार्मिक को अलग-अलग दायित्व एवं कर्तव्यों का पालन करने की जिम्मेदारी दी जाती है किन्तु समूहित रूप से सभी कार्मिकों का कार्य संस्था के विकास हेतु कार्य करना ही होता है। इसलिए सभी के बीच सामंजस्य का होना अत्यंत आवश्यक है। सामंजस्य बनाने में संबंधों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। संगठन के हित को ध्यान में रखते हुए उचित रूप में संबंधों को बनाए रखना चाहिए। संबंधों का निर्वाह इस प्रकार करना चाहिए कि कार्य के लिए एक उत्तम वातावरण बन सके।

इस प्रकार मनुष्य के सामान्य जीवन तथा कार्य-क्षेत्र दोनों में संबंधों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। जीवन संबंधों के आधार पर ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण किया जाता है। कार्य के साथ-साथ संबंधों का भी मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक है। मूल्यांकन के लिए यह

आवश्यक है कि संबंधों के दायरे और सीमाओं को उचित रूप से देखा जाए। सामान्य जीवन और कार्य-क्षेत्र में व्यक्ति के संबंध ही वास्तविक पूंजी है जो उसे एक कुशल व्यक्ति के रूप प्रस्तुत करती है। संबंधों का उचित रूप से निर्वाह करना व्यक्ति मानव कुशलता को प्रदर्शित करता है तथा संबंध ही हैं जो उसके लिए एक उचित जीवन को प्रस्तुत करता है। अतः संबंधों का निर्वाह उचित रूप से किया जाना चाहिए।

****

हिंदी - हमारी राज भाषा

सुश्री पूजा साव
कनिष्ठ अनुवादक

कंप्यूटर और हिंदी प्रयोग

वर्तमान समय में कंप्यूटर जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कंप्यूटर और इसके द्वारा निष्पादित कार्य पर निर्भर है। इसका उपयोग जीवन क सभी क्षेत्रों जैसे शिक्षा, व्यवस्था, चिकित्सा का क्षेत्र अथवा भाषा क्षेत्र में बहुलता के साथ हो रहा है।

भाषा के रूप में भारत ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर हिंदी प्रयोग बढ़ रहा है। हिंदी भाषा के प्रयोग में वृद्धि से कंप्यूटर का क्षेत्र अछूता नहीं है। हिंदी भाषा का पहला कंप्यूटर सॉफ्टवेयर 1977 में ई. सी. आई. एल कंपनी, हैदराबाद ने फोर्टान नाम से लाया था। इसके दो-तीन वर्ष बाद ही दिल्ली की डी. सी. एम. नामक कंपनी ने 'सिद्धार्थ' नाम से कंप्यूटर सॉफ्टवेयर लाया जिसमें द्विभाषी टाइपिंग की सुविधा उपलब्ध थी। यह प्रारंभिक विकास यात्रा थी जिसके द्वारा कंप्यूटर पर हिंदी के प्रयोग को आसान बनाने हेतु प्रयास किए जा रहे थे। लेकिन ये बहुत उपयोगी सिद्ध नहीं हुए। इसी समय सी.एम.सी नामक कंपनी ने (अंग्रेजी, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं) टाइपिंग हेतु, 'लिपि' नामक सॉफ्टवेयर निकाला। इस तरह कई और कंपनियों ने अपने स्तर पर हिंदी भाषा के सॉफ्टवेयर तैयार किए। राजभाषा हिंदी के विकास हेतु भारत सरकार के कई मंत्रालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के कई बैंकों में भी अपने स्तर पर अलग-अलग कंपनियों से अपने दैनिक कार्य को हिंदी में करने के लिए कई सॉफ्टवेयर और फॉण्ट तैयार कराए, जिनमें अक्षर, आकृति, सूसा, मंगल, श्रुति आदि प्रमुख हैं।

कंप्यूटर के लिए हिंदी भाषा की तकनीकी विकास यात्रा में सबसे बड़ा योगदान भारत सरकार की कंपनी सी-डैक (C-DAC : Centre of Development of Advance Computing), पुणे ने किया। सी-डैक द्वारा जिस्ट नामक एक कंप्यूटर कार्ड विकसित किया गया। इसकी सहायता से कंप्यूटर में सभी भारतीय भाषाओं के अक्षर कंप्यूटर स्क्रीन पर आ जाते थे और इन सबके उपयोग और टाइपिंग के लिए की-बोर्ड की सहायता से इन्हें लिखा जा सकता था। इसके लिए एक चिप विकसित किया गया था। इस चिप की विशेषता यह भी थी कि यह किसी भी बैंकिंग संस्थान अथवा वित्तीय संस्थान के डाटा प्रोसेसिंग का कार्य भी हिंदी में

करने में सक्षम था।इस प्रकार से कंप्यूटर पर हिंदी का प्रयोग काफी आसान हो गया। इसके बाद तो देश-विदेश की कई कंपनियों ने शिक्षण, प्रशिक्षण से लेकर अनुवाद आदि तक के लिए कई ऐसे सॉफ्टवेयर तैयार किये जिसकी मदद से हिंदी को न सिर्फ टाइप किया जा सकता था बल्कि सीखा भी जा सकता था। अब तो गूगल अनुवाद आदि जैसे न जाने कितने ऐसे सॉफ्टवेयर भी आ गये हैं जो हिंदी भाषा का अनुवाद दूसरी अन्य भाषाओं में करने में सक्षम हैं। यद्यपि इसमें पूर्णतः सफलता नहीं मिली है, लेकिन भाषा को लेकर जिस तरह का आकर्षण दुनिया की सभी महत्त्वूपर्ण कंपनियाँ दिखा रही हैं इसको देखते हुए लगता है वो दिन दूर नहीं जब हम अपनी मनपसन्द की भाषा लिखने, बोलने और सुनने में कभी भी, कहीं भी सक्षम होंगे।

हिंदी को कंप्यूटर से जोड़ने का सबसे पहला प्रयास राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा किया गया। जब हिंदी में काम करने के लिए 'शब्दिका' नामक सॉफ्टवेयर तैयार करवाया गया। इसके कुछ समय बाद 'अनुस्मारक' नामक सॉफ्टवेयर तैयार किया गया। इसकी विशेषता यह थी कि इसमें अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अन्तरण की सुविधा उपलब्ध थी।

हिंदी के पास अपना कोई सॉफ्टवेयर नहीं था इसका निर्माण भारत सरकार की संस्था सी-डैक ने सबसे पहले किया और जिसका नाम 'लीप' रखा। कुछ दिनों बाद माइक्रोसॉफ्ट ने हिंदी विंडोज़ नामक सॉफ्टवेयर लॉन्च किया जो हिंदी में टाइपिंग आदि के लिए सक्षम था।हिंदी तकनीक के क्षेत्र में सबसे बड़ा विकास उस समय हुआ, जब भाषा की एक नयी एनकोडिंग प्रणाली विकसित हुई, जिसे यूनिकोड (Unicode) कहते हैं। यूनिकोड का शाब्दिक अर्थ है जिसमें भाषा की कोड की जाने वाली छवियाँ एक जैसी हों, जिसमें एकरूपता हो। युनिकोड के माध्यम से हिंदी टंकण में एकरूपता देखेने को मिली। भिन्न-भिन्न फॉन्ट जिनके किसी अन्य फॉन्ट के साथ न खुलने से परेशानियों का सामना करना पड़ता था। युनिकोड के आने से यह समस्या हल हो गई। इससे एक संयोजन मिला जो किसी भी फॉन्ट में टाइप किए गए सामग्री को कॉल सकता था , यदि वह यूनिकोड में टाइप किया गया हो। यूनिकोड प्रणाली मूलतः उन्हीं कंप्यूटर में सुचारू रूप से चलते हैं जिनकी काम की क्षमता पेंटियम-4 और रैम (RAM) क्षमता कम-से-कम 256 मेगाबाइट की हो। आज माइक्रोसॉफ्ट के लगभग सभी कम्प्यूटरों में यह सुविधा उपलब्ध है चाहे वह माइक्रोसॉफ्ट एक्स.पी. हो अथवा विंडोज विस्टा।

तकनीक की दुनिया में हिंदी की महत्ता उस समय और बढ़ने लगी जब डिजीटल क्रान्ति में हिंदी के समाचार-पत्रों को ई-समाचार-पत्र में निकालना प्रारम्भ कर दिया। इस क्षेत्र में प्रारम्भिक प्रयास करने का श्रेय मध्य प्रदेश, इन्दौर शहर से निकलने वाले समाचार-पत्र नयी दुनिया को जाता है, जिसने सबसे पहले इंटरनेट की दुनिया का पहला समाचार पत्र वेबदुनिया

नाम से प्रारम्भ किया। इसके बाद ई-समाचार-पत्रों का दायर बढ़ता गया, जैसे भास्कर डॉट कॉम, जनसत्ता डॉट कॉम आदि। ई-समाचार-पत्रों की लोकप्रियता को देखते हुए ई-सामाचार-पत्रों की बाढ़ आग गयी। धीरे-धीरे हिंदी भाषा का इंटरनेट में इतना उपयोग बढ़ने लगा कि लोग ऑनलाइन पत्रिकाएँ चलाने लगे, जिसमें साहित्यिक कविता, कहानी से लेकर उपन्यास तक सभी प्रकार की सामग्री दी जाने लगी।

राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा भी कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के कई सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। विभाग द्वारा कई प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाए जाते हैं जिनके माध्यम से कार्मिकों को हिंदी के प्रयोग हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। इसके परिणाम-स्वरूप कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने में बहुत आसानी हो गई है और सरकारी-कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग भी बहुत बढ़ गया है।

अतः सभी के सम्मिलित प्रयासों के फलस्वरूप आज कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना बहुत अधिक आसान हो गया है।

***

श्री इमरान खाटीक
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"पृथ्वीराज रासो का संक्षिप्त परिचय"

पृथ्वीराज रासो इस ग्रंथ के रचनाकार कवि चंदवरदाई थे। परंपरा के अनुसार जानकारी मिलती है कि कवि चंद सम्राट पृथ्वीराज चौहान के मित्र थे। वह उनके राज कवि भी थे। यह भी कहा जाता है, कि उनका जन्मदिन पृथ्वीराज चौहान का जन्मदिन था। दोनों का जन्म एक ही दिन संवत 1151 में लाहौर में हुआ। बचपन से चंदवरदाई पृथ्वीराज के साथ रहने लगे और साथ ही उन्होंने शिक्षा दीक्षा ली। जब शहाबुद्दीन गौरी पृथ्वीराज चौहान को कैद करके गजनी ले गया तो चंद भी वहां पहुंचे। वे रासो की रचना में व्यस्त थे काम अधूरा छोड़ कर उन्हें जाना पड़ा। वे रासो का काम अपने बेटे जल्हन को सौंप कर गए। इस बारे में काव्य पंक्ति है-

पुस्तक जल्हण हत्थ दै।
चलि गज्जन नृपकाज।।

गजनी पहुंचकर कवि ने अपने सम्राट को मुक्त कराने की योजना बनाई। एक दिन शहाबुद्दीन की सभा में उन्होंने पृथ्वीराज के धनुष्य बाण चलाने की ऐसी तारीफ की, कि शहाबुद्दीन के मन में जिज्ञासा हुई आखिर चंद के कहने के अनुसार योजना की गई और शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज का बाण कौशल्य प्रत्यक्ष देखने का इंतजाम हुआ कहते हैं कि आवाज की दिशा में बाण चलाने में निपुण चंद के इशारे पर बाण छोड़ा और शहाबुद्दीन का वध किया। इसके बाद चंद और पृथ्वीराज दोनों ने आत्मस्वर्ग कर लिया। परंपरा के अनुसार मिली हुई यह संक्षिप्त जानकारी है। कवि चंद रचित पृथ्वीराज रासो के बारे में विद्वानों में विवाद हुए इस रचना को सप्रमाण अर्थात प्रमाणिक मानने वाले विद्वानों का गुट बना और अप्रमाणिक मानने वालों का भी गुट बना। रासो काव्य में दिए गए सवंत के बारे में खुलासा किया गया आनंद संवत के अनुसार तिथि सही निकलती है।

कर्नल टॉड नामक अंग्रेजी विद्वान ने इसे प्रमाणिक माना और 30000 पदों का अंग्रेजी अनुवाद किया। इसी तरह फ्रेंच विद्वान कारसाद कासी ने भी रासो का प्रकाशन आरंभ किया था लेकिन सन 1875 में डॉ. मुलर को कश्मीर में एक संस्कृत ग्रंथ मिला उस ग्रंथ का नाम पृथ्वीराज विजय महाकाव्य था। उसमें कुछ घटनाएं अलग रूप में वर्णित है। इससे संदेह हुआ लेकिन बाद में मोहनलाल पंडा, मुनि जिनविजय और डॉ. दशरथ शर्मा ने सभी आक्षेपों का

खंडन किया विक्रम संवत के स्थान पर आनंद संवत का आधार लेकर रासो में वर्णित समय व तिथि प्रमाणिक सिद्ध हुई।

रासो के भागों को डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रमाणिक माना है। पृथ्वीराज रासो में पद्मावती नायिका है। उसका नक-शीख वर्णन कवि ने किया है। श्रृंगार और वीर रस में काव्य वर्णित है। काव्य की दृष्टि से पृथ्वीराज रासो का सौंदर्य श्रेष्ठ है। कथा में ऐतिहासिकता भी है और काव्य सुलभ काल्पनिकता का योग भी है। रासो काव्य को पढ़कर वन-उपवन, नगर-युद्ध और नायक-नायिका के चरित्र का वर्णन आदि काव्य स्थल मनोरंजक लगते है। काव्यानंद मिलता है।

रासो का काव्य सौंदर्य

1) **वर्णनात्मकता:-** पृथ्वीराज रासो में नगर वर्णन है। वन उपवन सरोवर दुर्ग सेना युद्ध आदि के वर्णन में कवि नीपूर्ण लगता है। नारी सौंदर्य वर्णन और मनोभावों का चित्रण करने में भी कवि चंद की चतुराई सराहनीय है।

2) श्रृंगार वर्णन:- पद्मावती के सौंदर्य वर्णन में माधुर्य पूर्ण शैली का प्रयोग किया है। वयसंधी योवनागमन अनुराग प्रथम मिलन और संयोग कालीन लज्जा आदि का बड़ी तल्लीनता से वर्णन किया है। पद्मावती को चंद की सोलह कलाओं से सुशोभित माना है। स्वयं चंद इस चंद्रमुखी के पास बैठकर इसके सौंदर्य को निहारता है, सौंदर्य रूपी अमृत पीता है ऐसी कल्पना कवि चंद ने की है-

मनहुँ कला ससभान कला सोलह सो बन्निय।
बाल वैस, ससि ता समीप अम्रित रस पिन्निय॥
बिगसि कमल-स्रिग, भ्रमर, बेनु, खंजन, म्रिग लुट्टिय।
हीर, कीर, अरु बिंब मोति, नष सिष अहि घुट्टिय॥
छप्पति गयंद हरि हंस गति, बिह बनाय संचै सँचिय।
पदमिनिय रूप पद्मावतिय, मनहुँ काम-कामिनि रचिय॥

इस प्रकार कवि चंद वरदाई ने नायिका सोलह कलाओं से सुसज्जित है और बाल्यावस्था में चांद ने इसी चंद्रमुखी के पास बैठकर कलाए सीखी है। खंजन पक्षी और भ्रमर के माध्यम से इन आंखों की सुंदरता वर्णित की है। आंखों की पुतलियां स्थिर नहीं है, चंचल है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए भ्रमर का उदाहरण लिया लिखा है। पद्मावती के ओंठो तथा नासिका का सौंदर्य भी वर्णित किया है। उनकी चाल हंस की गति की है.ऐसी सुंदर नारी पद्मावती को देखकर ऐसा लगता है कि साक्षात कामदेव की रती प्रकट हुई हो।

नारी सौंदर्य वर्णन में नखसिख वर्णन तथा आयु की अवस्थाओं का वर्णन प्राचीन काव्य में अनेक कवियों ने किया है। कवि चंद ने भी उस पद्धति का अनुसरण किया है।

वीर रस काव्य:-

बज्जीय धीर निसान राज चौहान चहुदिशी।
सकल सुर सामंत समर बल तंत्रमंत्र तिथि।।

पृथ्वीराज चौहान लड़ाई के लिए निकले हैं। उनमें बहुत उत्साह है। वीर रस का स्थाई भाव उत्साह होता है। युद्ध के आरंभ में डंका पीटा जाता था और दुश्मन को ललकारा जाता था। निशान फहराए जाते थे। नारे लगाए जाते थे। ऐसा वर्णन कवि ने किया है। इस प्रकार पृथ्वीराज रासो में श्रृंगार और वीर रस का सुंदर वर्णन मिलता है।

***

श्री रवि कुमार
लेखापरीक्षक

बेटी

बेटी हमारे घर की अनमोल परी है।

बेटी के बिना हमारे घर का आंगन सूना सूना लगता है।

बेटियाँ घर की लक्ष्मी होती है। अगर परिवार में बेटी न हो तो वह घर सुना होता है। परिवार में बेटी का होना परिवार की ख़ुशी को प्रदर्शित करता है। जिन घरो में बेटियाँ होती है वह घर हमेशा खुशियों से झूमता रहता है। बेटी परिवार में भगवान का एक बहुत ही खास वरदान है। बेटियां किसी भी परिवार का एक मजबूत स्तंभ होती हैं। उनके मधुर, मुस्कुराते चेहरे और सुंदरता पितृत्व की खुशी को की गुना बढ़ा देता है। एक माता-पिता के लिए बेटियों की खूबसूरत और मीठी यादें बहुत मायने रखता है। जीवन में बेटियों की तुलना किसी भी प्रकार से नहीं की जा सकती। वह बहुत प्यारी होती हैं।

आज भी मुझे वह दिन याद है जैसे मानो वह कल की ही बात हो जब वह पैदा हुई थी। मुझे उसकी पहली नराज़गी याद है और मैंने जो उसका दर्द महसूस किया वह बहुत ही भयंकर था। जिस तरह से उसकी मुस्कान और चुलबुली हंसी मेरे मन में उछलती है, मुझे एक स्नेह के धागे से उसके साथ जोड़ देती है और उसे मजबूती प्रदान करती है। समय के साथ-साथ यह बंधन और मजबूत होता जाता है। मेरी बेटी मेरी सबसे अच्छी दोस्त है और वह मेरे लिए सबसे बड़ी खुशियों में से एक है। उसकी हंसी इतनी प्रिय है कि उसका एहसास दिल में अपनी कोमलता को दर्ज करता है। बेटी से जुड़ी कोमल भावनाओं को माता पिता के अलावा कोई नहीं समझ सकता। माता पिता के लिए उसका प्यार उसके आंखों में स्पष्ट दिखाई देता है।

भारतीय समाज मे जातिय व लैंगिक भेदभाव का प्रचलन हजारों वर्ष पुराना है। भारत मे अब भी ऐसे कई गांव व कस्बे हैं, जहाँ जातिय व लैंगिक भेदभाव अपने चरम सीमा पर है। लेकिन बड़े शहरों में ऐसा भेदभाव कम देखने को मिलता है। भारत के गाँव हो या शहर हर जगह भेदभाव का थोडा अंश जरुर देखने को मिलता है। लेकिन शिक्षा ने इसे काफी हद तक कम कर दिया है। लेकिन अब भी कई ऐसे गांव है जहाँ बेटियों को शिक्षा नही दिया जाता, मात्र घरेलू कामों के लिये उनका पालन-पोषण किया जाता है।

बेटियां संपूर्ण विश्व की निर्माण-कर्ता, वृद्धि-कर्ता व जगत-जननी है। वह बेटियां ही है जो सभी रिश्तो को एक धागे में पीरों के रखती हैं। इसलिए लोगों को उनका सम्मान करना चाहिए और उनकी रक्षा करनी चाहिए। आज भी लोग बेटियों के प्रतिभा और कौशल को बिना पहचाने बेटियों को बोझ समझ लेते हैं और इसी कारण उनके जन्म होने से पहले ही उनकी हत्या कर दी जाती है। बिटिया कोई बोझ नहीं होती हैं। बस यह हमारे समाज की गंदी सोच है जो लोग बेटियों को बोझ मानते हैं। उन्हे स्वयं एक मां ने जन्म दिया है जो किसी की बेटी थी। रूढ़िबद्ध धारणा के वजह से लड़के और लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। इस भेदभाव की शुरुआत बचपन से ही परिवारों में शुरु हो जाता है, जैसे- पहनावे में, खिलौनों में और स्वभाव के जरिए। पहनावे में मत-पिता बोलते हैं तू तो लड़का है तू तो जींस ही पहनेगा और तू तो लड़की है तू तो फ्रॉक या सलवार सूट ही पहनेगी। खिलौनों में लड़कों को बैट बल्ला जैसे खिलौने दिए जाते हैं और लड़कियों को गुड़िया या चूल्हा बर्तन आदि जैसे खिलौने दिए जाते हैं। स्वभाव में परिवार के लोग बचपन से ही बोलते हैं तू तो लड़का है, लड़के कभी रोते नहीं, रोने का काम तो लड़कियों का है। ये छोटी-छोटी बातें लड़कों और लड़कियों में भेदभाव बचपन से ही उत्पन्न करते हैं और बचपन से ही उनके दिमाग में ये बैठा दिया जाता है और लड़की भी यही सोचती है कि मैं तो लड़की हूं मुझे तो यही करना है और लड़के भी लड़कियों का इज्जत नहीं कर पाते क्योंकि बचपन से तो वह यह सुनते आते हैं की लड़कियां हमारे सेवा के लिए बनी है जो पूरी गलत और निराधार बात है। हमें अपनी सोच बदलने की जरुरत है। कुछ संस्कृतियों ने परम्परा के नाम पर मनुष्य के रूप में उनकी गरिमा को भी छीन लिया है जिन पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए।

बेटी दिवस एक विशेष दिन है जो बेटियों के सम्मान में मनाया जाता है। प्रति वर्ष 25 सितंबर को बेटी दिवस के रूप मनाया जाता है। आज हमारे देश कि बहुत सारी बेटियों ने कई क्षेत्रों में अपने देश का नाम रोशन किया है। जैसे इंदिरा नुयी जी, किरण मजूमदार शॉ जी, वंदना लूथरा जी आदि ने कारोबार में तो मैरी कॉम जी, साइन नेहवाल जी , पी वी सिंधु जी आदि ने खेलों के माध्यम से देश का नाम रोशन किया है। उदाहरण के लिए बहुत से नाम हैं जिन्होंने अगल-अलग क्षेत्रों से सफलता हासिल किया है और यह सिद्ध किया है कि लड़के और लड़कियों की कुशलता में कोई अंतर नहीं है।

अब वह समय आ गया है कि बेटा और बेटी के बीच का अंतर समाप्त हो गया है। बेटियां भी हर अवसर पर अपनी उपस्थिति स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है। वर्तमान में बदलते समय के साथ-साथ उनका स्थान भी बदल गए है। वे हर क्षेत्र में आगे आकर अपनी भूमिका अदा कर रही हैं। हर परिस्थिति में अपने आप को ढलने की क्षमता उनके अंदर है। वे कहीं भी अपने आप को कमजोर नहीं होने देती है। वे अपने कार्य और व्यवहार से अपने दिलों में अपना स्थान रखती हैं। आज के समय में बेटियों के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदल गया है

और लोग उन्हें बेटों से कम नहीं समझते। बेटियाँ समय पर अपने साहस एवं धैर्य का परिचय देते हुए आगे आ रही हैं। समाज का उनके लिए मायने बदल रहे है। किन्तु अभी कुछ हिस्सों में कुछ नकात्मकता है जिसमें सुधार की आवश्यकता है। सुधारों को यथोचित रूप से लागू करने की आवश्यकता है।

अतः बेटियों का परिवार में स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे समय के अनुसार प्रत्येक क्षेत्र में अपना उचित योगदान देते हुए अपनी उपस्थिति को बताती है। इस प्रकार हर वह घर धन्य है, जहां बेटियों का जन्म होता है।

***

श्री रूपेश कुमार
लेखापरीक्षक

भारत में बोली जाने वाली भाषाएं

भारत अनेकता में एकता प्रदर्शित करने वाला देश है। यहाँ हर एक राज्य में अलग-अलग तरह के रहन-सहन और बोली तथा संस्कृति देखने को मिलती है। यहाँ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बोलियाँ बदल जाती हैं। यहाँ राज्यों में कई भाषाओं का प्रसार है। भारत की भाषाएं मुख्य रूप से दो प्रमुख भाषाई परिवारों से संबंधित हैं: इंडो- यूरोपीय, जिसकी शाखा इंडो- आर्यन है और फिर द्रविड़ियन है। भारत में बोली जाने वाली अन्य भाषाएं मुख्य रूप से ऑस्ट्रो-एशियाटिक और टिबेटो-बर्मन भाषाई परिवारों से आती हैं, साथ ही कुछ भाषाएं अलग-थलग पड़ जाती हैं। देवनागरी लिपि में हिंदी भारत के केंद्र सरकार की आधिकारिक राजभाषा है, एक अनंतिम आधिकारिक उप-भाषा के रूप में अंग्रेजी के साथ, व्यक्तिगत राज्य विधानसभाएं किसी भी क्षेत्रीय भाषा को उस राज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में अपना सकती हैं। भारत का संविधान देश के विभिन्न हिस्सों में बोली जाने वाली 22 आधिकारिक भाषाओं को मान्यता देता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 344 के अंतर्गत पहले केवल 15 भाषाओं को राजभाषा की मान्यता दी गयी थी, लेकिन 21वें संविधान संशोधन के द्वारा सिन्धी को तथा 71वाँ संविधान संशोधन द्वारा नेपाली, कोंकणी तथा मणिपुरी को भी राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया। बाद में 92वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची में चार नई भाषाओं बोडो, डोगरी, मैथिली तथा संथाली को राजभाषा में शामिल कर लिया गया। इस प्रकार अब संविधान में 22 भाषाओं को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। भारत में इन 22 भाषाओं को बोलने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग 90% है। इन 22 भाषाओं के अतिरिक्त अंग्रेज़ी भी सहायक राजभाषा है और यह मिज़ोरम, नागालैण्ड तथा मेघालय की राजभाषा भी है। कुल मिलाकर भारत में 58 भाषाएँ स्कूलों में पढ़ायी की जाती है।

भारत में विदेशी भाषाओं का प्रभाव बड़े पैमाने पर रहा है। भारतीय उप-महाद्वीप ने अपने पूरे इतिहास में कई विजय प्राप्त की हैं। निश्चित रूप से सबसे लंबे समय तक चलने वाला प्रभाव आर्यन आक्रमण था जो वैदिक भाषण को अपने साथ लाता था। 13 वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मुस्लिम आक्रमण होने तक, संस्कृत, सौरासेनी प्राकृत, और फिर सौरासेनी अपभ्रंश ने शुरुआती समय से ही अंतर्राज्यीय संचार की भाषाओं के रूप में कार्य किया। इस समय के दौरान, फारसी अदालत की भाषा बन गई और बाद में मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान एक आधिकारिक भाषा के रूप में इस्तेमाल किया गया था। 1837 में,

अंग्रेजों ने फारस की जगह फारस-अरबी लिपि में अंग्रेजी और हिंदुस्तानी को प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए लिया, और 19 वीं सदी के हिंदी आंदोलन ने फारसीकृत शब्दावली को संस्कृत व्युत्पत्तियों के साथ बदल दिया और देवनागरी के साथ फारस-अरबी लिपि का उपयोग प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए किया।

भारत में भाषाओं का प्रमुख रूप से क्षेत्रीय आधार पर प्रसार निम्नानुसार है:

भारत के राज्य और केंद्र शासित प्रदेश	**भाषा**	**अन्य भाषा**
जम्मू एवं कश्मीर	कश्मीरी	डोगरी और हिंदी
हिमाचल प्रदेश	हिंदी	पंजाबी और नेपाली
हरियाणा	हिंदी	पंजाबी और उर्दू
पंजाब	पंजाबी	हिंदी
उत्तराखंड	हिंदी	गड्वाली, कुमाऊनी, उर्दू, पंजाबी और नेपाली
दिल्ली	हिंदी	पंजाबी, उर्दू और बंगाली
उत्तर प्रदेश	हिंदी	उर्दू
राजस्थान	हिंदी	पंजाबी और उर्दू
मध्य प्रदेश	हिंदी	मराठी और उर्दू
पश्चिम बंगाल	बंगाली	हिंदी, संताली, उर्दू, नेपाली
छत्तीसगढ़	छत्तीसगढी	हिंदी
बिहार	हिंदी	मैथिली और उर्दू
झारखंड	हिंदी	संताली, बंगाली और उर्दू
सिक्किम	नेपाली	हिंदी , बंगाली
अरुणाचल प्रदेश	बंगाली	नेपाली, हिंदी और असमिया
नागालैंड	बंगाली	हिंदी और नेपाली
मिजोरम	बंगाली	हिंदी और नेपाली
असम	असमिया	बंगाली, हिंदी, बोडो और नेपाली
त्रिपुरा	बंगाली	हिंदी
मेघालय	बंगाली	हिंदी और नेपाली
मणिपुर	मणिपुरी,	नेपाली, हिंदी और बंगाली
ओडिशा	उड़िया	हिंदी, तेलुगु और संताली
महाराष्ट्र	मराठी	हिंदी , उर्दू और गुजराती
गुजरात	गुजराती	हिंदी, सिंधी, मराठी और उर्दू

कर्नाटक	कन्नड़	उर्दू, तेलुगू, मराठी और तमिल
दमन और दीव	गुजराती	हिंदी और मराठी
दादरा और नगर हवेली	गुजराती	हिंदी, कोंकणी और मराठी
गोवा	कोंकणी	मराठी, हिंदी और कन्नड़
आंध्र प्रदेश	तेलुगु	उर्दू, हिंदी और तमिल
केरल	मलयालम	-
लक्षद्वीप	मलयालम	-
तमिलनाडु	तमिल	तेलुगू, कन्नड़ और उर्दू
पुडुचेरी	तमिल	तेलुगू, कन्नड़ और उर्दू
अंडमान और निकोबार द्वीप	बंगाली	हिंदी, तमिल, तेलुगू और मलयालम

उपर्युक्त भाषाओं के अतिरिक्त भी बहुत सी भाषाएं है जो भारत में बोली जाती हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार है: भोजपुरी, राजस्थानी, मगधी, हरियाणवी, मारवाड़ी, मालवी, मेवाड़ी, खोरठ, बुंदेली, बघेली, पहाड़ी, लमण, अवधी, हरहुति, गढ़वाली, निमाड़ी, सदन, धुंधरी, तुलुहारी, तुलु, सुरगुजिया, बागड़ी राजस्थानी, बंजारी, नागपुरिया, सूरजपुरी, सिलहटी आदि। भाषा का स्वरूप अत्यंत ब्यापक है। बोली जाने वाली बोलियों कहा जाता है कि

"कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी"

कोस दूरी मापने की एक ईकाई है। एक कोस लगभग 1.5 किलोमीटर के बराबर होता है। इस प्रकार से भारत में बोली जाने वाली बोलिया की संख्या का अनुमान लगाया जा सकता है।

***

वर्ष 2021-22 में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु कार्यालय के दो अनुभागों को राजभाषा शील्ड-2021-22 प्रदान किया गया।

कार्यालय की आंतरिक राजभाषा शील्ड-2021-22 प्रशासन अनुभाग तथा लेखापरीक्षा दल-एनएचएआई को प्रदान किया गया।

कार्यालय की आंतरिक राजभाषा शील्ड-2021-22 के साथ प्रशासन अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी

कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम

"सार्वजनिक जीवन में पूर्ण सत्यनिष्ठा, कर्तव्य के प्रति समर्पण, नैतिक मानकों और ईमानदारी को बनाए रखना" विषय पर अधिकारी एवं कर्मचारियों को जागरूक करने के उद्देश्य से श्री राजबीर सिंह, मलिक, सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी का व्याख्यान दिनांक 18/10/2022 को आयोजित किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर शपथ लेते हुए महानिदेशक महोदय, समूह अधिकारी एवं अधिकारी तथा अन्य कर्मचारी

कार्यालय द्वारा दिनांक 31 अक्टूबर, 2022 से 06 नवंबर, 2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस दौरान कार्यालय में कई आयोजन किए गए।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता के प्रतिभागियों के साथ महानिदेशक महोदय एवं समूह अधिकारी

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान महानिदेशक महोदय का व्याख्यान

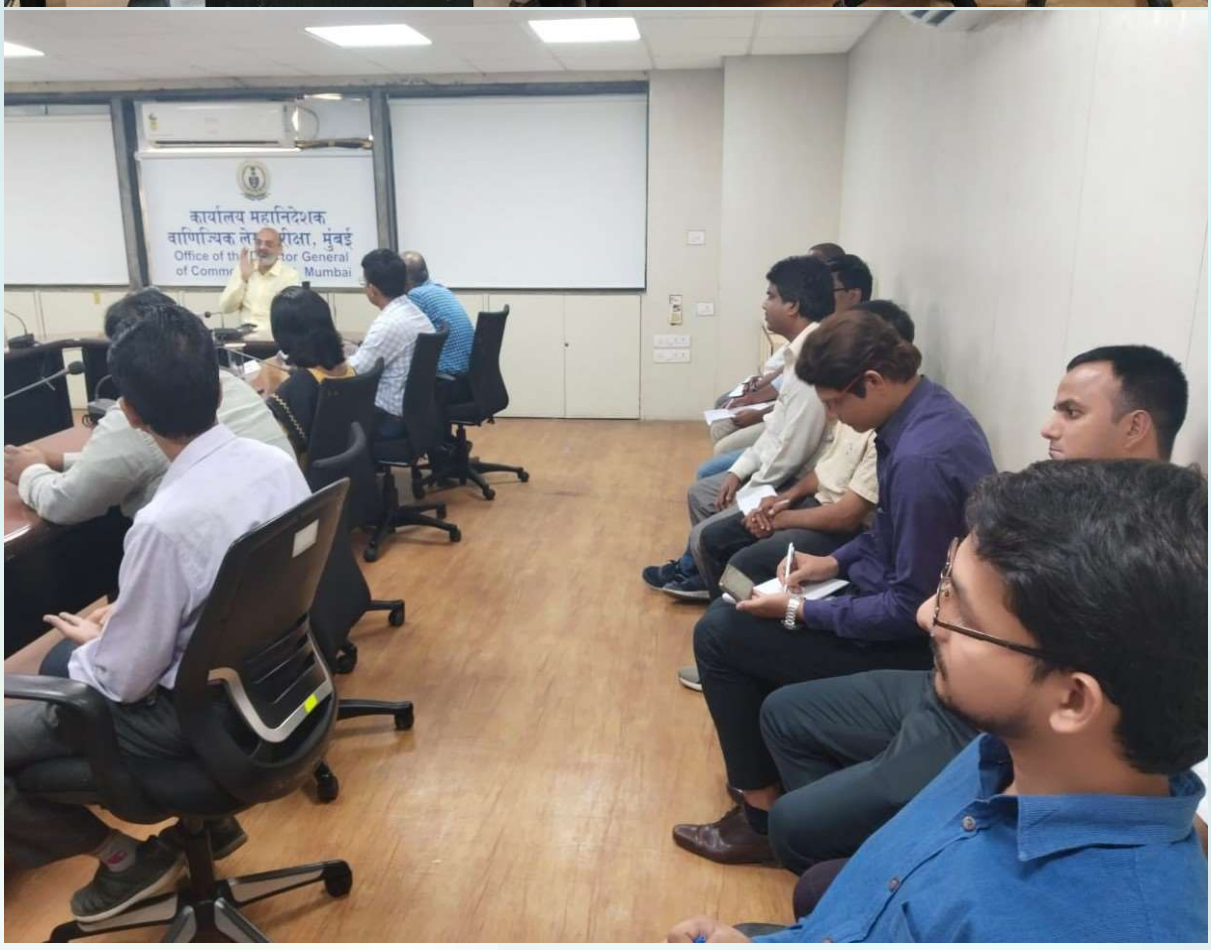

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान महानिदेशक महोदय के व्याख्यान से लाभान्वित होते कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी

ऑडिट दिवस

ऑडिट दिवस उस दिन की याद में मनाया जाता है कि जब वर्ष 1860 में 16 नवंबर को सर एडवर्ड ड्रमण्ड ने पहले महालेखापरीक्षक ने इस पद का प्रभार संभाला था। प्रथम ऑडिट दिवस 16 नवंबर, 2021 को मनाया गया तथा दूसरा 16 नवंबर, 2022 को मनाया गया। यह दिन इस संस्था के प्रत्येक सदस्य को लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा के आदर्श वाक्य का पालन करने के लिए एक अनुस्मारक है - व्यापक सार्वजनिक भलाई के लिए सत्य का मार्ग। यह दिन अच्छी प्रथाओं, व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा और उच्च पेशेवर मानकों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की पुष्टि करने का दिन है। यह संस्था के अधिकारियों और कर्मचारियों को हितधारकों के साथ जुड़ने और इस देश के नागरिकों को एक सार्वजनिक लेखापरीक्षा प्राधिकरण के रूप में उनकी समर्पित सेवा के बारे में बताने का अवसर प्रदान करता है।

कार्यकारी उत्तरदायित्व को मजबूत करने के लिए विभागीय अभिमूल्यन नोट, प्रबंधन पत्र और अध्ययन रिपोर्ट पेश की जाती हैं। लेखापरीक्षा निष्कर्षों पर नज़र रखने के लिए ये उत्पाद कार्यकारी के लिए उपयोगी होंगे। सीएजी की लेखापरीक्षा रिपोर्ट के साथ यह पहल कार्यपालिका के दिन-प्रतिदिन के कामकाज में ठोस लाभ लाएगी। वर्तमान में हमारा कार्यालय ओआईओएस सिस्टम या (वन आईएएडी वन सिस्टम) नामक एक एकीकृत आईटी सिस्टम लागू कर रहा है, जो ऑडिट प्रोसेस ऑटोमेशन और नॉलेज मैनेजमेंट के लिए एंड-टू-एंड एंटरप्राइज वाइड आईटी सिस्टम है।

द्वितीय ऑडिट दिवस के दौरान कार्यालय में इस दिन को यादगार बनाने के लिए निम्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं:

1- पोस्टर बनाना

2- निबंध लेखन

3- सूक्ति/स्लोगन लेखन

इस दिन यह राष्ट्र निर्माण में हमारा विनम्र योगदान है, जिसमें सार्वजनिक लेखापरीक्षा इस देश के नागरिकों के लाभ के लिए सुशासन, समावेशी विकास और सतत विकास के लिए भरोसेमंद सहायता के रूप में काम करेगी।

17 से 23 नवंबर 2022
AUDIT WEEK
17 TO 23 NOVEMBER 2022

****

हिंदी कार्यशाला

अक्टूबर-दिसंबर, 2022 की तिमाही हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 06/12/2022

भूमिका प्रजापति, 6वीं कक्षा

सुपुत्री श्री सरोज प्रजापति, स. ले. अ.

मोहित कुमार सुधांशु, चौथी कक्षा

सुपुत्र श्री अमित कुमार, आं.प्र.प्र.

आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) असम, गुवाहाटी

उपर्युक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 10वें संस्करण की ई-प्रति की प्राप्ति हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है।

'मेरी सहेली का नामकरण' एवं 'मराठा साम्राज्य' पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

सधन्यवाद।

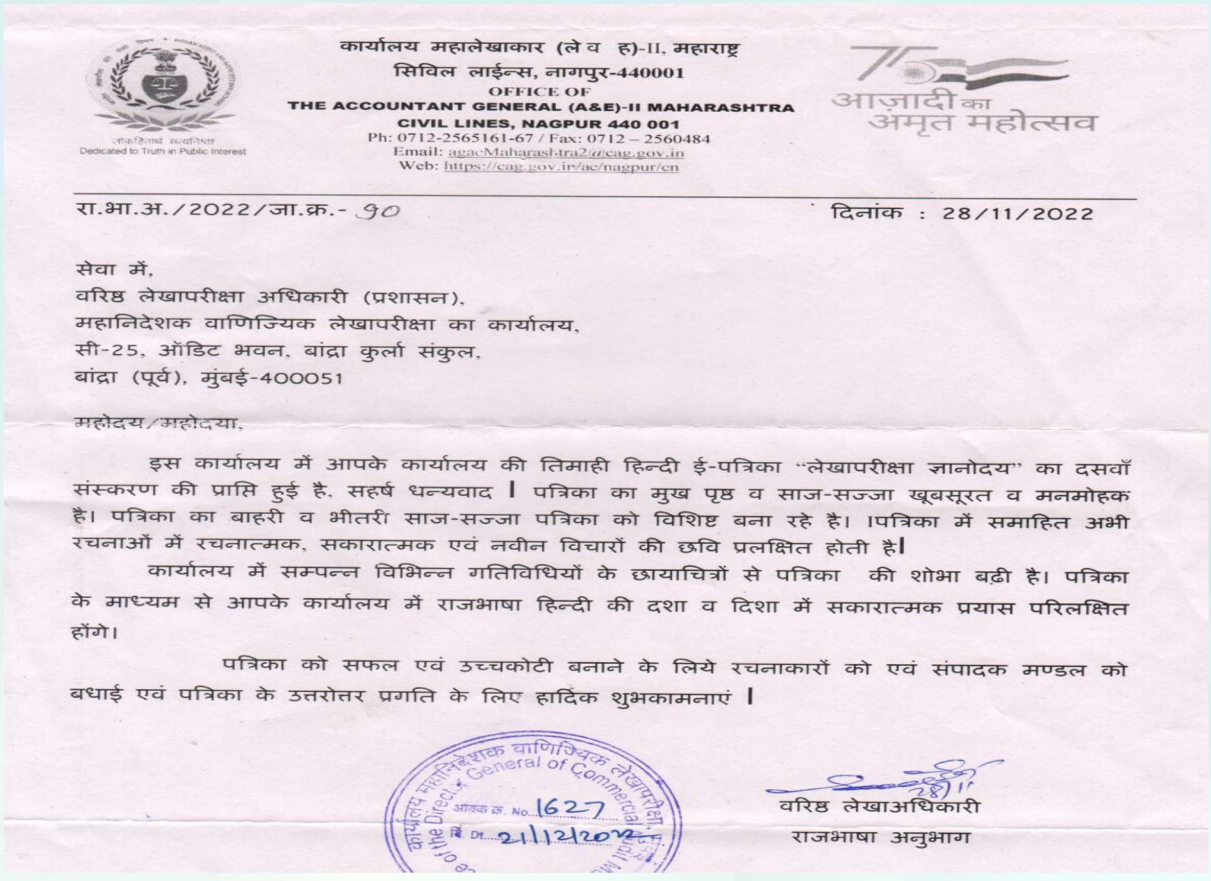

मौसमी चौधरी,

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र
सिविल लाईन्स, नागपुर-440001
OFFICE OF
THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)-II MAHARASHTRA
CIVIL LINES, NAGPUR 440 001
Ph: 0712-2565161-67 / Fax: 0712 – 2560484
Email: agaeMaharashtra2@cag.gov.in
Web: https://cag.gov.in/ac/nagpur/en

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

आज़ादी का अमृत महोत्सव

रा.भा.अ./2022/जा.क्र.- 90 दिनांक : 28/11/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
सी-25, ऑडिट भवन, बांद्रा कुर्ला संकुल,
बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051

महोदय/महोदया,

इस कार्यालय में आपके कार्यालय की तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का दसवाँ संस्करण की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख पृष्ठ व साज-सज्जा खूबसूरत व मनमोहक है। पत्रिका का बाहरी व भीतरी साज-सज्जा पत्रिका को विशिष्ट बना रहे है। ।पत्रिका में समाहित अभी रचनाओं में रचनात्मक, सकारात्मक एवं नवीन विचारों की छवि प्रलक्षित होती है।

कार्यालय में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका की शोभा बढ़ी है। पत्रिका के माध्यम से आपके कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की दशा व दिशा में सकारात्मक प्रयास परिलक्षित होंगे।

पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटी बनाने के लिये रचनाकारों को एवं संपादक मण्डल को बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

आवक क्र. No. 1627
दि. Dt. 21/12/2022

वरिष्ठ लेखाअधिकारी
राजभाषा अनुभाग

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

पत्रांक- हिंदी प्रकोष्ठ/ले.प./पत्रिका पावती/2022-23/212 दिनांक-11.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक (वाणिज्यिक लेखापरीक्षा)
मुंबई - 400051

विषय- तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें अंक की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित **तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें अंक** की एक प्रति की प्राप्ति हुई है। धन्यवाद! पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही अच्छी है।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी प्रकोष्ठ

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर 440001

संख्या.राजभाषा 8(II)/2022-23/जा.क्र. ....
दिनांक:- /11/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई, महाराष्ट्र -400051

विषय : हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें संस्करण पर प्रतिक्रिया संबंधी ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री आनंद कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'अहंकार', श्री नीरज कुमार, लेखापरीक्षक का लेख 'डायनासोर काल' तथा श्री रवि कुमार, लेखापरीक्षक का लेख 'मुंबई की लोकल ट्रेन' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं । पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

WASIM MINHAS, HO(AMG-I HINDI CELL)-WM, HINDI CELL

हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर -751017 (ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2022-23 दिनांक-29.11.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स(पूर्व),
मुंबई - 400051
ईमेल- admin.mum.pdca@cag.gov.in

विषय- ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के **10वें** संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** का **10वाँ** संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री आनंद कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक	अहंकार
2.	श्री रवि कुमार, लेखापरीक्षक	मुंबई की लोकल ट्रेन
3.	श्री हरीश कुमार, डी.ई.ओ.	पर्यावरण

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,
कीर्ति
(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल–462011

क/.हि.क./फा.–07 (II)/जावक - 37 दिनांक 28.11.2022

प्रति,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा मुंबई
भरतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
सी–25 ऑडिट भवन , 8 वॉ तल, बांद्रा–कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पूर्व), मुंबई–400051

विषयः– तिमाही हिंदी ई–पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें संस्करण की पावती बाबत।

संदर्भः– संख्याः डीजीसीए/प्रशा./का.प./2/678 दिनांक 21.10.2022

महोदय,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा ई–पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" कें 10वें संस्करण की ई–प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर मेरी सहेली का नामकरण, अंहकार, मुंबई की लोकल ट्रेन, डायनासोर काल, पर्यावरण, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज–सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हिंदी कक्ष

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज –211001
REGIONAL TRAINING INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

लोकहिताय सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक : क्षे.प्र.सं.(प्र) / विविध (हिन्दी पत्रिका पावती) / फा.–132 / 525
दिनांक: २६ / 11 / 2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई–400051

विषय :तिमाही हिन्दी ई–पत्रिका ''लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'' के 10 वें अंक के संबंध में।

संदर्भ :ई–मेल के माध्यम से प्राप्त पत्र दिनांक 21.10.2022

महोदय,

उपरोक्त संदर्भित विषयान्तर्गत लेख है कि आपके कार्यालय द्वारा तिमाही हिन्दी ई–पत्रिका ''लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'' के 10 वें अंक की ई–प्रति इस संस्थान को प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को बधाई एवं साधुवाद तथा पत्रिका को सफल बनाने एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए संस्थान परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र महानिदेशक महोदय के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

भवदीय,

26.11.22

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय का कार्यालय
सी- 25 ऑडिट भवन, बांद्रा- कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई -400051
Email- pdacentralmumbai@cag.gov.in

पत्रांक:म.नि.ले.प/के/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/लेखापरीक्षा ज्ञानोदय /153 दिनांक :16/12/2022

सेवा में
व.ले.प.अ./प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई

विषय:- हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10 वें संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित राजभाषा पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10 वें संस्करण** की प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ, रूपसज्जा, छायाचित्र एवं समाहित सभी रचनाएं प्रशंसनीय एवं उच्च स्तर के हैं । विशेष रूप से श्री संजय कोटलगी की 'मराठा साम्राज्य', श्री आनंद कुमार की 'अहंकार', श्री इमरान खाटीक की 'द्वन्द' तथा श्री रवि कुमार की 'मुंबई की लोकल ट्रेन', श्री हरीश कुमार की 'पर्यावरण' एवं अन्य सभी रचनाएं पठनीय हैं । हिंदी भाषा के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं ।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया

व.ले.प.अ./राजभाषा

कार्यालय महालेखाकार (ले0 एवं हक0) उत्तराखण्ड

"महालेखाकार भवन", कौलागढ़, देहरादून–248195

पत्रांक:26 / हि0प्र0 / 2022–23 / विभागीय पत्रिकाएं / पावती / 689 दिनांक 02.11.2022

सेवा में

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई – 400051

विषयः–हिन्दी ई–पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई–पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 10 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा की उतरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

02/11/22

हिन्दी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI

सं प्रनिलेप(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2022-23/124 दिनांक: 15.11.2022

सेवा में ,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिंदी
कार्यालय वाणिज्यक लेखापरीक्षा,
बांद्रा,
मुंबई- 400 051

विषय : कार्यालयीन हिंदी वार्षिक पत्रिका **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** के 10वें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित कार्यालयीन हिंदी पत्रिका **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** के 10वें अंक की प्राप्ति इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाए एक से बढ़कर एक है विशेषतः सुश्री वी. सरला कृत **"मेरी सहेली का नामकरण"**, श्री आनंद कुमार सिंह कृत **"अहंकार"** एवं श्री रवि कुमार कृत **"मुंबई की लोकल ट्रेन"** अत्यंत प्रशंसनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

संख्या: हि.क./बाह्य पत्रिका/2022-23/619 दिनांक: 07.11.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई -400051

विषय:- **तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें संस्करण की पावती के सम्बन्ध में।**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 10वा संस्करण प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाए उत्कृष्ठ, पठनीय एव ज्ञानवर्धक है। इस अंक में प्रकाशित कविता "**द्वंद**" विशेष रुप से उल्लेखनीय है। सभी रचनाकारो एव संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (ले0 व ह0) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 व 5, सैक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172-2603824
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agacharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2022-23/237
दिनांक: 05.12.2022

सेवा में

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई।

विषय: तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 10 वें संस्करण के प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 25.10.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 10वें संस्करण की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री संजय कोटलगी का लेख 'मराठा साम्राज्य', श्री रवि कुमार का लेख 'मुंबई की लोकल ट्रेन' एवं श्री नीरज कुमार का लेख 'डायनासोर काल' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त सुश्री वी सरला की कविता 'मेरी सहेली का नामकरण' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया

पूजा सिंह 5/12

हिंदी अधिकारी

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA
PLOT NO. 5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.

संख्याः हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/197

दिनांकः 31.10.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई।

विषयः **हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 10वें अंक की ई-प्रति।**

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय की ई-मेल दिनांक 21 अक्तूबर 2022 के द्वारा वार्षिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 10वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाहित अहंकार, मुंबई की लोकल ट्रेन तथा पर्यावरण विशेष रूप से पठनीय हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर व आकर्षक है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

द्वितीय बहुतलीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,
ए.जे.सी. बोस रोड 234/4, कोलकाता-700020
फोनः ,2289/4111/12/13-033फैक्सः 4060 2289-033
ई मेलः-bresdkolkata@cag.gov.in

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/433

0 2 DEC 2022
दिनांकः-01.12.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वॉ तल बांद्रा कुर्ला कॉमप्लेक्स,
बांद्रा पूर्व, मुम्बई-400 051

विषयः- हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका "ज्ञानोदय" के 10वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "ज्ञानोदय" के 10वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। "ज्ञानोदय" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। विशेषकर सुश्री वी.सरला जी की कविता **'मेरी सहेली का नामकरण'**, श्री संजय कोटलगी जी का आलेख **'मराठा सामाज्य'**, श्री इमरान खाटीक जी की कविता **'द्वंद'**, श्री रवि कुमार जी का आलेख **'मुंबई की लोकल ट्रेन'**, श्री नीरज कुमार जी का आलेख **'डायनासोर काल'** और श्री हरीश कुमार जी का आलेख **'पर्यावरण'**, अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय हैं। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चत ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा। पत्रिका की साज-सज्जा और अन्तर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "ज्ञानोदय" के उज्जवल भविष्य के लिए 'आकांक्षा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
हस्ता/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक) तमिलनाडु, चेन्नई-18 टेलीफोन: 044-24324530 फैक्स: 044-24320562 **Website :** www.agae.tn.nic.in	सत्यमेव जयते	**INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT** **OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU,** **361, ANNA SALAI, CHENNAI-18** **Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562** **Website :** www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/ 37253/ 36 दिनांक 16/11/2022

सेवा में, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशासन) कार्यालय महानिदेशक वाणिज्य लेखापरीक्षा मुंबई सी-25, ऑडिट भवन आठवां तल, बांद्रा , कुर्ला कंपलेक्स बांद्रा (पूर्व) मुंबई 400051	To, Senior Audit Officer (Administration) Office of the Director General of Commercial Audit Mumbai C-25, Audit Bhavan 8th Floor, Bandra, Kurla Complex Bandra (East) Mumbai 400051

विषय: आपकी हिंदी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का दसवां अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का दसवां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक मे प्रकाशित **सुश्री वी.सरला द्वारा लिखित कविता "मेरी सहेली का नामकरण", श्री आनंद कुमार सिंह द्वारा लिखित "अहंकार", श्री रवि कुमार द्वारा लिखित "मुंबई की लोकल ट्रेन" और श्री इमरान खटीक द्वारा लिखित "द्वंद" विशेष रूप से उल्लेखनीय है।** राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

एम० सुधाकरन

(एम.सुधाकरन)

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिंदी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

Government of India

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/ 113

दिनांक: 29-11-2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25 ऑडिट भवन, 8वां तल, बांद्रा कुर्ला (पू)
मुंबई - 400 051

<u>विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।</u>

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह-पत्रिका <u>"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10 वें अंक</u> की ई-पत्रिका प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है। खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने व पदक जीतने वाले सभी खिलाड़ियों को बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका का मुख पृष्ठ सुंदर है तथा अंतिम पृष्ठ पर वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम की जानकारी ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

(वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम उ0प्र0, प्रयागराज

Office of the Accountant General (Accounts & Entitlement)-I, U.P., Prayagraj

सत्यमेव जयते

प.सं. हि.अ./पत्रिका/ 71867

दिनांक : 18.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन, 8वां तल, बांद्रा-कुर्ला संकुल,
बांद्रा (पूर्व), मुंबई - 400051

विषय: हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें अंक की पावती एवं प्रतिक्रिया प्रेषित करने के संबंध में ।

महोदया,

आपके पत्रांक: डी.जी.सी.ए./प्रशा./का.प./2/ दिनांक 21.10.2022 द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं । विशेषकर सुश्री वी. सरला की कविता **"मेरी सहेली का नामकरण"**, श्री आनंद कुमार सिंह का लेख **"अहंकार"**, श्री इमरान खाटीक की कविता **"द्वंद"**, श्री रवि कुमार का लेख **"मुंबई की लोकल ट्रेन"**, एवं श्री नीरज कुमार का लेख **"डायनासोर काल"** आदि रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं ।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई । कार्यालय परिवार पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है ।

भवदीया,

18/11/2022

हिन्दी अधिकारी

Director General of Commercial
आवक क्र. No. 1456

सं.हि.प्रशा.-2022-23/ 153

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एंव
पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का
कार्यालय, बेंगलोर-560001

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER
AUDIT BOARD,BENGALURU-560001.

दिनांक - 18.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
सी-25 ऑडिट भवन, 8 वाँ तल बांद्रा कुर्ला कॉम्पलेक्स,
बांद्रा (पूर्व) मुंबई - 400051

विषय:-प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी गृह ई - पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 10 वां अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

Director General of Commercial
आवक क्र. No. 1449
दि. Dt. 24/11/2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार
वीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001

संख्या/No. हि०अ०/ले०प०/प्रतिभाव/37/2022-23/78

Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna - 800 001

दिनांक/Date : 15.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यकलेखापरीक्षा
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स
बांद्रा (पूर्व), मुम्बई-400051

विषयः तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें संस्करण का प्रतिभाव ।

महोदय,

आपके कार्यालय की तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें संस्करण की प्रति प्राप्त हुई । इस हेतु बधाई एवं धन्यवाद । हिंदी पखवाड़ा समारोह को समर्पित इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय हैं । इसके लिए पत्रिका के सभी रचनाकारों को साधुवाद । श्री संजय कोटलगी की रचना 'मराठा साम्राज्य', श्री शरद धनकर की 'शिरीष कुमार मेहता' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

राजभाषा हिन्दी की निरन्तर उन्नति और कार्यालयीन कार्मिकों की सृजनात्मकता को मुखर बनाने में "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का अमूल्य योगदान देती रहे, इसी शुभकामना के साथ सम्पादक मंडल को पुनः बधाई एवं धन्यवाद ।

आवक क्र. No. 1437
दि. Dt. 22/11/22

भवदीय,

15/11/2022

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E) PUNJAB & U.T., CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-27002174, फैक्स 0172-2703110
क्रमांकः- हिंदी कक्ष/अंकुर/हिं.प./2022-23/494
दिनांकः-09-11-2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन, 8 वाँ तल, बांद्रा-कुर्ला काम्प्लेक्स,
बांद्रा (पूर्व), मुंबई - 400051

विषयः-विभागीय पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10 वें संस्करण की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 10 वाँ संस्करण प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री आनंद कुमार सिंह की "अहंकार" एवं श्री रवि कुमार की "मुंबई की लोकल ट्रेन" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

आवक क्र. No. 1385
दि. Dt. 15/11/2022

भवदीय

हिंदी अधिकारी

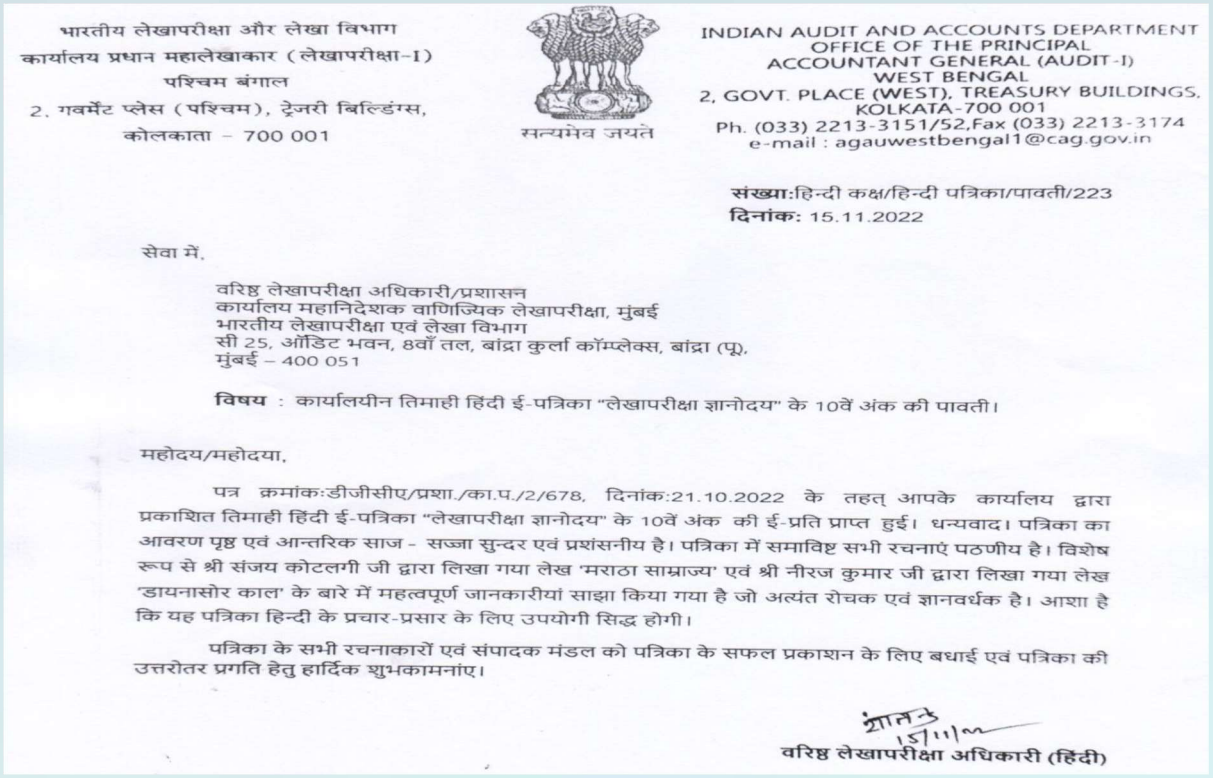

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52,Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या:हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/223
दिनांक: 15.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
सी 25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पू),
मुंबई – 400 051

विषय : कार्यालयीन तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें अंक की पावती।

महोदय/महोदया,

पत्र क्रमांकःडीजीसीए/प्रशा./का.प./2/678, दिनांक:21.10.2022 के तहत् आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 10वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठणीय है। विशेष रूप से श्री संजय कोटलगी जी द्वारा लिखा गया लेख 'मराठा साम्राज्य' एवं श्री नीरज कुमार जी द्वारा लिखा गया लेख 'डायनासोर काल' के बारे में महत्वपूर्ण जानकारीयां साझा किया गया है जो अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनांए।

15/11/22

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

आप सभी से प्राप्त प्रशंसा एवं शुभकामनाओं के लिए हार्दिक आभार। आपके पत्रों के माध्यम से पत्रिका के संबंध में आपकी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई, तदर्थ सादर धन्यवाद। आपके प्रतिक्रियाओं से हमारे आगामी अंको हेतु प्रोत्साहन मिलता है तथा हम पत्रिका के प्रकाशन द्वारा राजभाषा के विकास में अपना योगदान हेतु प्रेरित होते हैं। हमारे छोटे से प्रयास की सराहना के लिए आप सभी का सादर धन्यवाद तथा हम भविष्य में भी आपके सहयोग की आशा करते हैं। हमे आशा है कि हम सभी एक साथ मिलकर राजभाषा हिंदी के विकास में अपना योगदान देते रहेंगे।

अतः आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपने विचार हमें प्रेषित करें।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारीप्रशासन/

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

कार्यालय के एक प्रतिभावान साथी स्वर्गीय आतिश हाड़के, लेखापरीक्षक के असमय प्रयाण का दुखद समाचार साझा करते हुए अत्यंत कष्ट की अनुभूति हो रही है, जो दिनांक 19/10/2022 को अखंड ज्योति में समा गए। "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" परिवार की तरफ से भावपूर्ण श्रद्धांजलि ।

।। शत् शत् नमन ।।

राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें		
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	